International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
Volume-4, Issue-3 June - 2017
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

जनपद मेरठ के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों तथा छात्रों के विभिन्न मूल्यों का अध्ययन

Dr.Anita Gupta
Lecturer, B.Ed. Department
I.N.P.G. College, Meerut

सार–
सत्य और अहिंसा जैसे सर्वोच्च मानवीय मूल्यों के सफल प्रयोक्ता गाँधी के इस देश में मूल्यों की जैसी अवमानना हो रही है, वह सभी के लिए चिन्ता का विषय है। मूल्य–केन्द्रित राजनीति के नाम पर जिस तरह मूल्य–हीनता पनप रही है, मान्यताओं की रक्षा के नाम पर उन्हें जिस प्रकार ध्वस्त किया जा रहा है, सिद्धान्त के नाम पर स्वार्थपरता की जिस पकार पराकाष्ठा हो रही है, सामाजिक न्याय के नाम पर जिस प्रकार अन्याय का चतुर्डिक बोलबाला हो रहा है, भारतीय इतिहास को जिस प्रकार तोड़ा–मरोड़ा जा रहा है, और दलगत, जातिगत तथा सम्प्रदायगत विद्वेष को फैलाकर जिस प्रकार राष्ट्रीय एकता को तोड़ा जा रहा है उससे तो यही प्रतीत होता है कि भारत माता स्वयं ही आत्मदाह कर लेगी। यदि हम भारत को बचाना चाहते हैं, भारतीय समाज को एकजुट रखना चाहते हैं तो हमें अपनी विनाश–यात्रा के मध्य क्षणभर रूककर सोचना पड़ेगा कि हम कहाँ जा रहे हैं। यह सोच, यह चिन्तन, मूल्यों का चिन्तन है।

पस्तावना–
प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य है, जो संसार का निर्माण करती है और इस संसार में अच्छे मनुष्य भी है और बुरे भी। मनुष्य अपने कृत कार्यो से ही अच्छा और बुरा बनता है। जो अच्छा होता है उसकी सभी जगहों पर प्रशंसा होती है, उसकी कीर्तिगाथाएँ उसके सुयश को बढ़ाती है। अन्ततः वह भद्र, इंसान के रूप में प्रतिष्ठित होता है। वहीं पर बुरे कार्य करने वालों की सर्वत्र निन्दा की जाती है। वस्तुतः प्रत्येक मनुष्य अपने कृत कार्यों से ही सुर और असुर के रूप में समाज में प्रतिष्ठित होता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह असुरी प्रतृत्ति को त्यागकर समाज का कल्याणकारी सदस्य बनने हेतु भद्र, आदर्शवादी, शाश्वत, सनातन मूल्यों के अनुरूप अपने जीवन दर्शन का निर्माण करें। वर्तमान समय में व्यक्ति भौतिक–वादिता, धन–लोलुपता, औद्योगीकरण, नगरीकरण से युक्त परिवेश से इतना घुलमिल गया है कि उसे आदर्शों, मूल्यों का तनिक भी एहसास नहीं रह गया है। सहयोग, प्रेम, सद्भाव, विनम्रता, दया, परोपकार, परमार्थ, सेवादान, इत्यादि सामाजिक मूल्यों से वह दूर हट गया है। येनकेन प्रकारेण मनुष्य अपने स्वार्थ से वशीभूत होकर केवल अपने हित तक ही सीमित रह गया ह। मानव–मानव के प्रति, पिता–पुत्र के प्रति, गुरू–शिष्य के प्रति आज के युग में तनिक भी आत्मीय एवं रागात्मक सम्बन्ध नहीं है। परिणामतः सर्वत्र अशान्ति, अराजकता, उपद्रव, कलह, वैमनस्यता, ईर्ष्या, दुःख का नग्न ताण्डव परिलक्षित है। मूल्यों के क्षरण की इस त्रासदी से समाज, शिक्षा और राष्ट्र एक नाजुक दौर से गुजर रहा है। सभ्यता, संस्कृति एवं शिक्षा अधापतन का शिकार होती जा रही है। समाज अपनी सभा को बचाने में असफल होता जा रहा है। संस्कृति जो कि सामाजिक मूल्यों (वबपंस टंसनमे) का सबसे बड़ा स्रोत (वनतबम) है, पश्चवादिता का शिकार होती जा रही है। शिक्षा मूल्य परक, सद्चरित्र, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, समाजसेवी, व्यक्तियों का सृजन नहीं कर पा रही है। दिन–प्रतिदिन शिक्षा भी पाश्चात्य संस्कृति, विचारों एवं मूल्यों को आत्मसात करती जा रही है। भारतीय धर्म, संस्कृति, आदर्शों, मूल्यों का आज की शिक्षा में नामोनिशान परिक्षतित नहीं हो रहा है। शिक्षा केवल व्यवसायिक, डॉक्टर, इंजीनियर आदि तैयार कर रही है। नैतिकता, सद्चरित्रता, धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से समन्वित पूर्ण व्यक्तिशाली व्यक्ति का निर्माण शिक्षा नहीं कर पा रही है। आज के शिक्षकों को मूल्यों का स्वतः ज्ञान नहीं है, इससे उनमें मूल्यवादी व्यक्तियों के निर्माण की आशा नहीं की जा सकती। पाठ्यक्रम, शिक्षणविधियों, अनुशासन एवं विद्यालयी परिवेश में मूल्यवादी दृष्टिकोण तनिक भी नजर नहीं आ रहा है। आज के नौनिहाल श्रम के प्रति दकियानूसी होते जा रहे हैं। शिष्ट आचार पढ़े–लिखे होने के बाद भी नहीं कर रहे हैं। फलतः शिक्षा अपनी गुणवत्ता खोती जा रही है, समाजोत्थान का मार्ग कुंठित होता जा रहा है। शिक्षा को मूल्यपरक बनाने की माँग दिन–प्रतिदिन उठती जा रही है। समय की माँग को दृष्टिगत रखते हुए मूल्य शिक्षा को एक शैक्षिक प्रवृत्ति के रूप में स्थानापन्न किया गया है। क्योंकि किसी व्यक्ति में मूल्यों के समावेश का पूर्ण उत्तरदायित्व उसके बालायु के पारिवारिक परिवेश, माता–पिता, पास–पड़ौस तथा शिक्षकों पर निर्भर करता है। अतएव मूल्यों का सही ज्ञान देने वाला यदि कोई परिवेश है तो वह परिवार, बाल्यकाल के मित्रगण एवं शिक्षकगण ही हो सकते हैं। चूँकि मनुष्य मूलरूप से एक सामाजिक प्राणी है। अपनी प्रत्येक आवश्यकता

के लिए वह समाज व उसमें रह रहे अन्य व्यक्तियों पर निर्भर है। इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे न केवल समाज के अन्य प्राणियों के साथ एक सौजन्य का वातावरण बनाना पड़ता है, अपितु अपनी ओर से हर क्षण चौकन्ना रहना पड़ता है कि उसके कारण किसी अन्य को किसी बात का नुकसान न हो, क्योंकि उसके कारण जिसका नुकसान हुआ है, भविष्य में नुकसान प्राप्त व्यक्ति के द्वारा संभावित लाभों से वह वंचित रह सकता है। समाज में कोई भी ऐसा वर्ग नहीं है, जो अपना नुकसान चाहता हो। अतएव निश्चित उसे अपना व्यवहार ऐसा रखना पड़ता है कि वह सामाजिकता की दृष्टि से अपने व्यवहार में मूल्यों का अहसास दिलाये। व्यक्ति स्वयं अपने लाभ के लिए ही सही, मूल्यों, आदर्शों एवं प्रतिमानों को सीखता, समझता व व्यवहार करता रहता है। इन्हीं स्थितियों का संस्थापन व संवर्धन ही उसके मूल्यों का परियाँकन है। इसी तथ्य को यों भी कहा जा सकता है कि मूल्यों की दृष्टि से वह व्यक्ति एक आदर्श व्यक्ति है जो समाज के सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं, मानदण्डों व स्थापित अवधारणाओं के अनुसार व्यवहार करता है।

चूँकि माध्यमिक स्तर जो प्राथमिक व उच्चस्तर की शिक्षा प्रक्रिया के बीच की कड़ी है। अतः माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों को मूल्यों से युक्त होना चाहिए। विद्यालय स्तर पर शिक्षकों के मूल्यों पर विभिन्न प्रकार के अनुसंधान हो चके हैं। शिक्षकों से सम्बन्धित अनुसंधानों का अवलोकन करने के बाद हमारे सामने एक समस्या का उद्भव हुआ कि अभी तक माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन नहीं किया गया। चूँकि माध्यमिक स्तर के शिक्षक, शिक्षण प्रक्रिया में एक धुरी के समान होते है, जहाँ पर सारी शिक्षण प्रक्रिया केन्द्रित होती है। अतः यहाँ पर हम माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे। जिससे उनके मूल्यों में आने वाली रूकावट का निदान किया जा सके और शिक्षण प्रक्रिया को समाज व राष्ट्र के अनुरूप संचालित किया जा सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

मूल्य हमारे जीवन के आधार है। मूल्यों के बिना हम बंजर भूमि के समान हैं, जिस प्रकार बंजर भूमि पर खेती नहीं की जा सकती है, उसी प्रकार मूल्यहीन व्यक्ति अपने जीवन को समाज के साथ समायोजित नहीं कर सकता। आज चारों ओर भ्रष्टाचार, लूट, डकैती, बलात्कार आदि का बोलबाला है। चारों ओर अव्यवस्था व्याप्त है। शिक्षक और विद्यार्थियों पर प्रतियोगिता रूप दानव हावी हो गया है, जिससे वे अपने मूल्यों को खोते चले जा रहे हैं। उनके पास इतना समय नहीं है कि वे अपनी संस्कृति से परिचित हो सके। हमारी संस्कृति ही हमारे मूल्यों का घर है, अर्थात् संस्कृति हमारे मूल्यों का सशक्त स्रोत है। अतः आज आवश्यकता है कि हम अपनी संस्कृति से परिचित हो, अपने दायित्व को समझें, हमें अपने कर्तव्यों की जानकारी हो। जब तक हमें अपने कर्तव्यों और मूल्यों की जानकारी नहीं होगी, तब तक हम और हमारा समाज उन्नति के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता।

शिक्षक हमारे समाज का एक अभिन्न अंग है, जो समाज को दिशा निर्देश देता है; हमारे समाज को शिक्षित करता है; अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय व भावात्मक एकता में सहायक होता है। अतः शिक्षकों को मूल्यों से परिपूर्ण होना चाहिए। यदि शिक्षकों में मूल्यों की कमी है, तो शिक्षकों को शिक्षक शिक्षा के माध्यम से मूल्य शिक्षा दी जाये। आज हमारे शिक्षाविदों को यहय जानने की आवश्यकता है कि हमारे शिक्षकों में मूल्यों का विकास कहाँ तक हो पाया है। वे किस क्षेत्र में कमजोर है, जिससे उनकी इस कमजोरी को दूर किया जा सके। अतः यह परमावश्यक है कि शिक्षकों के मूल्यों का परीक्षण किया जाये; जिससे यह ज्ञात हो सके कि शिक्षकों में मूल्यों का विकास कहाँ तक हुआ और कहाँ तक उनका परिमार्जन किया जा सकता है। शिक्षकों को मूल्यों से परिपूर्ण होना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षक ही राष्ट्र के छात्र रूपी नागरिकों को तैयार करता है; और यही नागरिक राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर आगे ले जा सकते हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

जिस प्रकार जीवन में कोई भी कार्य उद्देश्य रहित नहीं होता, उसी प्रकार निश्चित उद्देश्यों के अभाव में अनुसन्धान कार्य को सुचारू रूप से पूर्ण नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक अनुसन्धान कार्य का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। अतएव अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ करने से पूव यह आवश्यक हो जाता है कि उसके निश्चित उद्देश्यों को निर्धारित किया जाये। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अध्ययन किया जाता है –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का सीमांकन या अध्ययन की परिसीमाएँ–

शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य सम्पूर्ण देश में होने के कारण सम्पूर्ण राष्ट्र शोधकार्य का विषय क्षेत्र है। भारत जैसे विशाल देश में इस समस्या पर शोधकार्य के लिए पर्याप्त समय, साधन एवं धन का होना आवश्यक है। शोधकर्ता की मनसा पूरे प्रदेश के उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों व छात्रों के मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन करने की थी। किन्तु धन, समय और अध्ययन की तत्कालिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने इसका परिसीमन अधिक विस्तारित न करके कतिपय बिन्दुओं पर इस प्रकार किया है–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में भौगोलिक दृष्टि से केवल उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद को लिया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल निजी (स्ववित्तपोषित) व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों को ही लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल निजी (स्ववित्तपोषित) व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयो के शिक्षकों व छात्रों को ही न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

दिशाविहीन कथन–

इस परिकल्पना को शून्य परिकल्पना (Null-Hypothesis) भी कहते हैं। इस परिकल्पना का उपयोग केवल सांख्यिकी की सार्थकता के परीक्षण के लिए किया जाता है।

अनुसन्धान कर्ता ने प्रस्तुत शोध म आवश्यकता, उद्देश्य एवं क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए समस्या के लिए कुछ निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया है –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''राजनैतिक मूल्य'' के क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''धार्मिक मूल्य'' के क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकां के ''धार्मिक मूल्य'' के क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''सामाजिक मूल्य'' के क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधकर्ता को नवीनतम ज्ञान के शिखरों पर ले जाता है, जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्षों एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ हैं, कहाँ निष्कर्ष–विरोध हैं, कहाँ अनुसन्धान की पुनः आवश्यकता है। जब वह दूसरे शोधकर्ताओं के अनुसन्धान कार्य की जाँच एवं मूल्यांकन करता है तो उसे बहुत–सी अनुसन्धान विधियों, बहुत–से तथ्यों, सिद्धान्तों, संकल्पनाओं एवं सन्दर्भ ग्रन्थों का ज्ञान होता है, जो उसके अपने अनुसन्धान में उपयोगी सिद्ध होते हैं। बोर्ग के अनुसार ''शैक्षिक अनुसन्धान में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किसी अनुसन्धानकर्ता के लिए समस्या के मूल तक पहुँचने का महत्वपूर्ण साधन है।''

दास (2009) ने उड़िया के माध्यमिक स्कूल पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में मूल्य शिक्षा की सम्भावना का अध्ययन किया। अध्ययन का विषय दार्शनिक प्रकृति का था। अतः दार्शनिक विधियां अपनाई गईं। आँकड़ों के लिए पुस्तकालय अध्ययन किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार रहे– (1) विभिन्न रिपोर्टों तथा विभिन्न समितियों और संगोष्ठियों के सुझावों से मूल्यों के प्रमुख प्रकार चिन्हित किये गये। (2) विभिन्न विद्यालयी विषयों के मूल्य भार भिन्न पाये गये। सभी विषयों को मिलाकर कुल 166 मूल्य पाये गये। चार अन्य मूल्य थे। अभिभावक–शिक्षक सम्बन्ध, एक आध्यात्मिक मूल और

संस्कार एक सांस्कृतिक मूल्य। (3) सभी श्रेणियों में उपेक्षित मूल्यों के बीच एक धनात्मक जुड़ाव और सह सम्बन्ध पाया गया। (4) कुछ मूल्य जैसे दूसरों की सेवा, सामान्य अच्छाई, सहयोग, सहायता की भावना, अनुशासन, वैश्विक प्रेम आदि पर अधिक बल दिया गया। (5) मूल्यों की प्राथमिकताओं में असन्तुलन पाया गया। (6) सेकेण्डरी स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों में मूल्यों का कोई प्रत्यक्ष संकेत नहीं पाया गया।

शुक्ला (2010) ने कामकाजी और घरेलू शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बीच मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रतिदर्श में 100 महिलाएं (50 शिक्षित और 50 अशिक्षित) तथा 100 शिक्षित महिलाएं (50 कामकाजी और 50 घरेलू) कानपुर शहर के विभिन्न क्षेत्रों से यादृच्छिक रूप से चुनी हुई। उपकरण के रूप में जी०पी० शेरी और आर०पी० वर्मा का पर्सनल वैल्यू क्वेश्चनायर का उपयोग किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष रहे– (1) सामाजिक, राजनीतिक और स्वास्थ्य मूल्यों के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध में शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया किन्तु धार्मिक मूल्यों में उनमें अन्तर पाया गया। (2) शिक्षित कामकाजी महिलाओं का दृष्टिकोण अशिक्षित तथा घरेलू महिलाओं की तुलना में भौतिकवादी पाया गया। (3) यह पाया गया कि शिक्षित तथा अशिक्षित महिलायें अपनी पारिवारिक प्रतिष्ठा के प्रति अधिक सचेत थी और ये महिलायें शिक्षित कामकाजी महिलाओं की तुलना में नई तकनीकी को अपनाने के मामले में जागरूक थी। (4) शिक्षित, अशिक्षित, घरेलू एवं कामकाजी महिलाएं सौन्दर्यात्मक मूल्यों के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण रखती थी।

सिंह एवं गुप्ता (2012) ने मूल्यों एवं बुद्धि के कुछ व्यक्तित्व निर्धारकों का अध्ययन किया। पटना के विभिन्न विद्यालयों के कक्षा 11 में अध्ययनरत 110 छात्रों (50 पुरुष व 60 महिला) के न्यादर्श पर यह अध्ययन केन्द्रित था। जलोटा का सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण एवं ओझा के मूल्य अध्ययन के मापन उपकरणों का प्रयोग किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष थेः– (1) न्यूरोटिसिज्म व सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक व धार्मिक मूल्यों से धनात्मक सम्बन्ध पाया गया जबकि इवस्ट्रावर्जन का सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों से धनात्मक सम्बन्ध पाया गया। (2) छात्राओं में धार्मिक, सामाजिक व सौन्दर्यात्मक मूल्यों के लिए प्राथमिकता पायी गयी जबकि छात्रों में सैद्धान्तिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों के लिए प्राथमिकता पायी गयी।

विश्लेषण एवं अर्थापन

परिकल्पना नं. 1–उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''राजनैतिक मूल्य'' क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं० 1

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य राजैतिक मूल्य पर अन्तर की सार्थकता

मूल्य	निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
राजनैतिक मूल्य	87.28	7.0119	87.3	6.8468	.0216

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य राजनैतिक मूल्य पर प्राप्त टी–मूल्य (.216) है, जो सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर तालिका मूल्य से कम है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना नं. 5 स्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य राजनैतिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नहीं है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों में राजनैतिक मूल्य एक समान रूप से विकसित ह; तथा जो अन्तर इनके मध्यमानों में है उसकी सांख्यिकी दृष्टिकोण से कोई सार्थकता नहीं है।

परिकल्पना नं. 2– उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''धार्मिक मूल्य'' क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं० 2

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य धार्मिक मूल्य पर अन्तर की सार्थकता

मूल्य	निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
धार्मिक मूल्य	86.3	8.6585	86.56	8.340	0.1529

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य धार्मिक मूल्य पर प्राप्त टी–मूल्य (.1529) है, जो सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर तालिका मूल्य से कम है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना नं. 6 स्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य धार्मिक मूल्य पर सार्थकता के दोनो स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नहीं है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों में धार्मिक मूल्य एक समान रूप से विकसित हैं; तथा जो अन्तर इनके मध्यमानों में है उसकी सांख्यिकी दृष्टिकोण से कोई सार्थकता नहीं है।

परिकल्पना नं. 3– उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों के ''धार्मिक मूल्य'' क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के विभिन्न छात्रों के मूल्यों की तुलना करने के लिए अध्ययन किये गये, आंकड़ों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मूल्य की गणना की गई है, जिनका सारांश निम्न तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका नं० 3

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य धार्मिक मूल्य पर अन्तर की सार्थकता

मूल्य	निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=150		निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=150		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
धार्मिक मूल्य	10.75	2.78	9.85	3.33	3.593

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों के मध्य धार्मिक मूल्य पर प्राप्त टी–मूल्य (3.593) है, जो सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर तालिका मूल्य से अधिक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना नं. 7 अस्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों के मध्य धार्मिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। तत्पश्चात तालिका में प्रदर्शित मध्यमानों की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान (10.75), सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान (9.85) से अधिक है। इससे तात्पर्य यह है कि सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों की तुलना में निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों में धार्मिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

परिकल्पना नं. 4– उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों के ''सामाजिक मूल्य'' क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं० 4

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सामाजिक मूल्य पर अन्तर की सार्थकता

मूल्य	निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=150		निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=150		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
सामाजिक मूल्य	18.02	3.68	13.68	3.98	13.867

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों के मध्य सामाजिक मूल्य पर प्राप्त टी–मूल्य (13.867) है, जो सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर तालिका मूल्य से अधिक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना नं. 8 अस्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों के मध्य सामाजिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। तत्पश्चात तालिका में प्रदर्शित मध्यमानों की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान (18.02), सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान (13.68) से अधिक है। इसका अर्थ यह है कि सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों की तुलना में निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के छात्रों में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

निष्कर्ष–

इस शोध के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है कि वह कैसा वातावरण है, जिसमें रहकर बालक का सम्पूर्ण विकास हो सकता है। इसके द्वारा यह ज्ञान भी प्राप्त हो सकता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के वातावरण में वे कौन–कौन से पक्ष हैं, जो इन दोनों में अन्तर पैदा करते है। उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत् शिक्षकों के लिए भी यह अध्ययन अति उपादेय सिद्ध होगा, क्योंकि सभी वर्तमान विद्यालय, उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद् एवं समाज, अध्यापक से केवल यह आशा करते हैं कि बालक को न केवल सूचनात्मक ज्ञान दें, बल्कि उसका यह भी दायित्व होता ळै कि वह बालक की व्यक्तित्व विभिन्नताओं की पहचान कर उसकी अन्तर्निहित मानसिक व सामाजिक योग्यताओं का विकास करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. मालवीय, राजीव; संस्करण (प्रथम) : 2006, ''शिक्षा के नूतन आयाम'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद; पृष्ठ संख्या–254
2. भट्टाचार्य, जी०सी०; द्वितीय संस्करण : 2006/07; ''अध्यापक शिक्षा''ए विनोद पुस्तक मन्दिर; राकेश ग्राफिक प्रिन्टर्स, आगरा; पृष्ठ संख्या–532
3. भाटिया, के०के०; नारंग, सी०एल०; संस्करण : 2006, ''शिक्षा के दर्शन शास्त्रीय तथा समाजशास्त्रीय आधार'', टण्डन पब्लिकेशन लुधियाना, पृष्ठ संख्या–470
4. पाण्डेय, रामशकल; तृतीय संस्करण : 2010; ''मूल्य शिक्षण'' विनोद पुस्तक मन्दिर; रवि मुद्रणालय, आगरा–2, पृष्ठ संख्या–174
5. सक्सेना, एन०आर०; मिश्रा, बी०के०; मोहन्ती, आर०के०; संस्करण : 2009, ''अध्यापक शिक्षा'', विनय रखेजा द्वारा आर० लाल बुक डिपो; राज प्रिन्टर्स, 103/2, जयदेवी नगर, गढ़ रोड़, मेरठ; पृष्ठ संख्या–344.
6. स्वरूप सक्सेना, एन०आर०; संस्करण : 2007, ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'', विनय रखेजा द्वारा आर० लाल बुक डिपो, मेरठ; पृष्ठ संख्या–944
7. डॉ० लाल; जैन, वशिष्ठ, के०सी०; संस्करण : 2012, ''यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ०/स्लेट, शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता'' , उपकार प्रकाशन, आगरा–2
8. त्यागी, जी०एस०डी०; तेईसवाँ संस्करण : 2005/2006, ''शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; पृष्ठ संख्या–808
9. अग्रवाल, जे०सी०; चतुर्थ संस्करण : 2007ए ''शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्धन''ए विनोद पुस्तक मन्दिर; रवि मुद्रणालय, आगरा–2; पृष्ठ संख्या–424.
10. लाल, रमन बिहारी; सोलहवाँ संस्करण : 2005–2006, ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'', रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ; पृष्ठ संख्या–699